श्री महिषासुर मर्दिनि स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दित मेदिनि विश्व विनोदिनि नन्दनुते
गिरिवर विन्ध्य शिरोधि निवासिनि विष्णु विलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठ कुटुम्बिनि भूरि कुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १ ॥

सुरवर वर्षिणि दुर्धर धर्षिणि दुर्मुख मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवन पोषिणि शङ्कर तोषिणि किल्बिष मोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुत रोषिणि दुर्मद शोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ २ ॥

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्ब वनप्रिय वासिनि हासरते
शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृङ्ग निजालय मध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभ गञ्जिनि कैटभ भञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ३ ॥

अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते
रिपुगज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते ।
निजभुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ४ ॥

अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते ।
दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानव दूत कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ५ ॥

अयि शरणागत वैरि वधूवर वीरवराभय दायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे ।
दुमि दुमितामर दुन्दुभि नाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ६ ॥

अयि निज हुङ्कृति मात्र निराकृत धूम्र विलोचन धूम्रशते
समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीजलते ।
शिव शिव शुम्भ निशुम्भ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ७ ॥

धनुरनुसङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटके
कनक पिशङ्ग पृषत्कनिषङ्ग रसद्भट शृङ्ग हतावटुके ।
कृतचतुरङ्ग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ८ ॥

जय जय जप्य जये जय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते
भण भण भिञ्जिमि भिङ्कृत नूपुर सिञ्जित मोहित भूतपते ।
नटितनटार्ध नटीनट नायक नाटित नाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ९ ॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
श्रित रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते ।
सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १० ॥

सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते
विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक भिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते ।
सितकृत फुल्ल समुल्लसितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ ११ ॥

अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त मतङ्गज राजपते
त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते ।
अयि सुदतीजन लालस मानस मोहन मन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १२ ॥

कमलदलामल कोमल कान्ति कलाकलितामल भाललते
सकल विलास कलानिलय क्रम केलिचलत्कल हंसकुले ।
अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्भकुलालि कुले
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यक पर्दिनि शैलसुते ॥ १३ ॥

करमुरलीरव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते
मिलित पुलिन्द मनोहर गुञ्जित रञ्जित शैल निकुञ्जगते ।

निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुण सम्भृत केलितले
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १४ ॥

कटितटपीत दुकूल विचित्र मयूख तिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणत सुरासुर मौलिमणि स्फुर दंशुल सन्नख चन्द्ररुचे ।
जितकनकाचल मौलि पदोर्जित निर्भर कुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १५ ॥

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैक नुते
कृत सुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते ।
सुरथ समाधि समान समाधि समाधि समाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १६ ॥

पदकमलं करुणा निलये वरि वस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि कमले कमला निलये कमला निलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परम्पद मित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १७ ॥

कनक लसत्कल सिन्धुजलै रनुसिञ्चिनुते गुणरङ्गभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ तटी परिरम्भ सुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १८ ॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते

किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभि रसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ १९ ॥

अयि मयि दीनदयालु तया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुभितासिरते ।
यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुताप मपाकुरु ते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥ २० ॥

इति श्री महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् ॥